ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 87-91
ISSN NO.-2347-2944
Vol.-10, No.-I, Issues-11 YEAR- June -2019

एनी बेसेन्ट के राजनीतिक विचार

अम्बुजेश कुमार मिश्र

शोध अध्येता, राजनीति विज्ञान विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर (उ0प्र0) भारत

Received- 17.04. 2019, Revised- 20.04.2019, Accepted - 25.04.2019 E-mail: ambujesh1981@gmail.com

सारांश : *एनी बेसेन्ट की प्रवृत्ति आध्यात्मिक थी अतः उनके विचारों और कार्यों पर धर्म का प्रभाव स्पष्टतः दिखाई देता है। उन्होंने राज्य व समाज की प्रत्येक समस्या का निवारण नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों के आधार पर करने का प्रयास किया। एनी बेसेन्ट का यह विश्वास था कि विश्व पर एक अदृश्य और रहस्यमय देवदूतों का मण्डल1 शासन करता है। विश्व की समस्त घटनाएँ उसी के नियंत्रण और निर्देशन में घटित होती हैं। आध्यात्मिक शक्ति के द्वारा ही सम्पूर्ण सृष्टि का कल्याण किया जा सकता है। हीगल की भाँति इनका भी मानना था कि मनुष्य का कल्याणकारी जीवन दैवीय इच्छा के अधीन ही सम्भव है। आध्यात्मिक शक्ति के द्वारा ही राज्य का निर्माण किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त विभिन्न धर्मों, संस्कृतियों और मान्यताओं में परस्पर सहयोग व एकता स्थापित होने पर ही राष्ट्र का निर्माण और विकास सम्भव हो सकता है। वे भारत के पुनर्निर्माण के लिये विभिन्न धर्मों तथा संस्कृतियों में एकता स्थापित करना चाहती थीं। उनके राष्ट्रीय एकता का स्वरूप आध्यात्मिक था, जिसे आगे चलकर महात्मा गाँधी ने भी स्वीकार किया।*

कुंजी शब्द – अदृश्य, रहस्यमय, नैतिक, दैवीय इच्छा, निवारण, संस्कृति, कल्याण, नियंत्रणश अध्यात्म।

एनी बेसेन्ट के राजनीतिक विचारों का आधार भी आध्यात्मिक ही था। उन्होंने राजनीतिक विचारों के अध्ययन की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा था कि – ''किसी भी अन्य व्यवस्था की तरह राजनीति में भी राजनीतिक पद्धति के चुनाव के लिये किसी व्यक्ति को उचित कार्य के लिये उचित विचार की आवश्यकता होती है।''2 भारत के राजनीतिक क्षेत्र में भी उनकी अद्वितीय भूमि रही। 1913 में प्रकाशित साप्ताहिक पत्र 'कॉमनवील' तथा दैनिक पत्र 'न्यू इण्डिया' के द्वारा देश के लोगों को संगठित कर, देश की सरकार के कार्य पद्धति में सुधार लाने एवं स्वराज्य की प्राप्ति के लिये निर्भयता एवं साहस के साथ 'होमरूल आन्दोलन' चलाया और देश में राष्ट्रवाद के प्रसार में सहायता पहुँचायी।

एनी बेसेन्ट में राजनीतिक क्षेत्र में विभिन्न पहलूओं पर अपने महत्वपूर्ण एवं प्रेरक विचार प्रस्तुत किया जिनका अध्ययन निम्नलिखित बिन्दुओं के अन्तर्गत किया गया है –

1.स्वतंत्रता सम्बन्धी विचार–एनी बेसेन्ट के जीवन तथा शिक्षाओं में स्वतंत्रता की उत्कृष्ट आकांक्षा सर्वत्र दिखाई देती है। प्रारम्भ से ही उन्हें अंतःकरण की स्वतंत्रता की तीव्र इच्छा थी इसलिये वे अपने जीवन के आरम्भिक काल में ही इंग्लैण्ड और ईसाइयत के चर्च के बन्धनों को तोड़कर चार्ल्स ब्रेडलॉ के 'स्वतंत्रत विचार आन्दोलन' (फ्री थॉट मूवमेण्ट) में सक्रिय रूप से सहभागिता प्रस्तुत कीं। इस आन्दोलन के सम्बन्ध में उन्होंने घोषणा की थीं कि – स्वतंत्र विचार आन्दोलन के प्रति वह सबसे अधिक कृतज्ञ इसलिये थी कि उसने नये–नये सत्यों के लिये उनके मस्तिष्क को खुला छोड़ रखा था और असाधारण प्रश्नों से भी जूझने के लिये वह उन्हें उत्साहित करता था।''3 उनका यह भी दावा था कि जब वे इंग्लैण्ड में थीं तभी उन्होंने 1877 ई0 में भारत के लिये 'स्वराज आन्दोलन' (होमरूल मूवमेण्ट) प्रारम्भ कर दिया था। उनका कथन है –''मेरी माँग है कि प्रत्येक व्यक्ति को, चाहे उसके विचार कुछ भी हो, अपने स्वतंत्र चिन्तन के परिणामों को सच्चाई और स्पष्टता के साथ व्यक्त करने का अधिकार हो और इसके लिये उसे न अपने नागरिक अधिकारों से वंचित होना पड़े, न उसकी सामाजिक स्थिति नष्ट हो और न उसकी पारिवारिक शान्ति भंग हो।........ स्वतंत्रता अमर और शाश्वत हैं, उसकी विजय निश्चित है, विलम्ब कितना ही हो जाये।. .... और भविष्य में भी विजय उसी की होगी, शर्त यह है कि हम, जो उसके पुजारी हैं, अपने तथा एक दूसरे के प्रति सत्यता का आचरण कर सकें। किन्तु जिन्हें उससे प्रेम है उन्हें चाहिए कि जैसे वे उसकी पूजा करते हैं वैसे ही उसके लिये कार्य भी करें क्योंकि परिश्रम ही स्वतंत्रता देवी की प्रार्थना है और भक्ति ही उसका एकमात्र गुणगान है।''4 अरविन्द के समान ही एनी बेसेन्ट का भी यह विचार था कि स्वतंत्रता आत्मा का गुण है। फिर भी उनका मानना था कि स्वतंत्रता एक बहुमूल्य विरासत है जिसे महान् परिश्रम और अनुशासन से ही प्राप्त किया जा सकता है। स्वतंत्रता तथा स्वच्छन्दता के मध्य किसी भी प्रकार का कोई सम्बन्ध नहीं होता है। स्वतंत्रता की प्राप्ति तभी सम्भव है जब व्यक्ति अपनी नैतिक और आध्यात्मिक शक्तियों का संरक्षण करके भावनात्मक पूर्णता को प्राप्त करता है। अतः उनका यह

अनुरूपी लेखक

मानना था कि वाह्य क्षेत्र में स्वतंत्रता प्राप्त करने से पहले आत्मा की आन्तरिक स्वाधीनता आवश्यक है। व्यवहारिक अहम् की वासनाओं का दमन करके ही स्वतंत्रता के साक्षात्कार के लिये आवश्यक चरित्र तथा अनुशासन प्राप्त किया जा सकता है।5

एनी बेसेन्ट का मानना था कि स्वतंत्रता एक पवित्र कार्य है जिसकी हर कीमत पर रक्षा की जानी चाहिए। स्वतंत्रता शाश्वत व अमर हैं जिसकी विजय निश्चित है। उन्होंने कहा है कि –''स्वतंत्रता एक अलौकिक देवी है जो शक्तिशाली और कठोर किन्तु कृपालु होती है। स्वतंत्रता रूपी देवी की सहानुभूति चीखने–चिल्लाने, उच्छश्रृंखल से अथवा तर्क–वितर्क द्वारा या घृणा के द्वारा प्राप्त नहीं की जा सकती, बल्कि पाशविक प्रवृत्तियों पर नियंत्रण रखकर, दुर्गुणों से विमुक्त होकर ही की जा सकती है। स्वतंत्रता की अनुभूति पहले हृदय में होती है और आत्मसंयम की आधारषिला पर ही स्वतंत्रता का महल खड़ा किया जा सकता है।''6

2. अभिजाततंत्रीय समाजवाद सम्बन्धी विचार– अभावग्रस्त लोगों के प्रति एनी बेसेन्ट को प्रारम्भ से ही अधिक स्नेह था अतः 1883 ई0 में उनका झुकाव समाजवाद की ओर दिखाई दिया। अपनी आत्मकथा में उन्होंने स्वयं स्वीकार किया कि, ''समाजवाद ने एक आदर्श के रूप में मेरे हृदय को प्रभावित किया है इसके आर्थिक कार्यक्रम ने मेरे मस्तिष्क पर प्रभाव डाला है। मेरा सम्पूर्ण जीवन लोगों की उन्नति के लिये समर्पित हो गया है और मैं उनकी अधिक से अधिक मदद करना चाहती हूँ।'' इसी समय वे प्रसिद्ध समाजवादी चिन्तक जार्ज बर्नार्ड शॉ के सम्पर्क में आयीं और समाजवादी विचारधारा की प्रबल समर्थक बन गयीं। एनी बेसेन्ट के समाजवाद के प्रति प्रेम के फलस्वरूप उनके परम मित्र ब्रेडलॉ के सहयोग से वंचित होना पड़ा जो एक कट्टर व्यक्तिवादी थे। इसके पश्चात् उन्होंने 'आवर कार्नर' नामक पत्रिका का सम्पादन किया, जिसमें उनके समाजवादी विचारो का विस्तृत उल्लेख मिलता है।7 इस पत्रिका में उन्होंने 'दी डिस्ट्रीव्यूशन ऑफ पावर इन सोसायटी', 'दी इवोल्यूशन ऑफ सोसायटी', 'मार्डन सोशियोलॉजी' जैसे ज्वलंत विषयों पर लेखमाला प्रकाशित कर व्यक्तिवाद की कमियों तथा समाजवाद की अच्छाइयों पर प्रकाश डाला। 1888 ई0 में इसका प्रकाशन बन्द हो गया।

एनी बेसेन्ट का समाजवाद किसी को मिटाने और किसी को बनाने में विश्वास नहीं करता था बल्कि ये प्रतिद्वन्द्विता के स्थान पर सहयोग मूलक समाज की स्थापना करना चाहती थीं अतः वे 'सर्वोदय' के लिये प्रयत्नशील थीं अतः उनके समाजवाद को 'अभिजाततंत्रीय समाजवाद' कहा गया। वे ऐसा समाजवाद चाहती थीं जिसमें सहयोग मूलक समाज के साथ–साथ शासन की बागडोर बौद्धिक वर्ग के हाथों में हो। इनका समाजवाद कार्लमार्क्स के समाजवादी विचारों से कम लेकिन प्लेटों के समाजवादी विचारों से ज्यादा प्रभावित प्रतीत होता है। प्लेटों के समान ही उनका यह विचार था कि शासन के संचालन की शक्ति 'दार्शनिक शासक' के हाथों में होनी चाहिए। अर्थात् ''जो बौद्धिक और नैतिक रूप से परिपक्व एवं प्रशिक्षित तथा अनुशासनबद्ध हों, उन्हीं के हाथों में शासन संचालन की शक्ति हो।''8 ऐसा होने से उसके दुरूपयोग की सम्भावना कम हो जाती है क्योंकि वे लोग ईश्वर के भय के कारण अनुचित कार्यों को करने से डरते हैं। एनी बेसेन्ट संस्कार विहीन सदस्यों के हाथों में शासनतंत्र सौंपने के विरूद्ध थीं। उन्होंने लिखा है –''हमें चाहिए कि राज्य को वह ज्ञान वापस दे दें, जिसका उसके पास अभाव हो गया है, और राज्य को इस खतरे से बचायें कि कहीं ज्ञान शून्य निर्वाचक गण अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्थाओं को न उलट दें और सम्भवतः हमें युद्ध में अथवा उससे भी अधिक गर्हित अपमान की भट्टी यें न झोंक दे। ये निर्वाचक गण वस्तुतः ऐसे व्यक्ति को चुनने के लिये झगड़ते हैं, जो उनकी खानों, नालियों और उनके स्थानीय मामलों की जिन्हें वे स्वयं भली–भाँति समझते हैं, देखभाल कर सकें। ये सामान्य सिद्धान्त है जिनका परिवर्द्धन किया जा सकता है और जिन्हें आधुनिक परिस्थितियों में लागू किया जा सकता है। मतदाताओं द्वारा नियंत्रित और संख्या द्वारा निर्देशित लोकतंत्रिक समाजवाद कभी सफल नहीं हो सकता। कर्त्तव्य अर्थ में अभिजाततन्त्रीय समाजवाद सभ्यता के विकास में एक महत्त्वपूर्ण उन्नति की ओर ले जाने वाला कदम होगा।''9 इस प्रकार एनी बेसेन्ट के विचारों में धनिकतन्त्रीय अभिजाततन्त्र का कोई स्थान नहीं था। बल्कि उन्होंने ज्ञान और नैतिक शक्ति पर आधारित ऐसे अभिजाततन्त्रीय समाजवाद की स्थापना पर बल दिया जिसमें शासन सत्ता धर्मपरायण तथा प्रज्ञावान लोगों के हाथों में होगी।

3. प्रतिनिध्यात्मक लोकतंत्र सम्बन्धी विचार– एनी बेसेन्ट प्रतिनिध्यात्मक लोकतंत्र की पक्षधर थीं। प्लेटो से प्रभावित होने के कारण उनका मानना था कि शासन की शक्ति बौद्धिक तथा नैतिक रूप से प्रशिक्षित अनुशासित व्यक्तियों के पास ही रहना चाहिए। लोकतांत्रिक समाजवाद वहाँ कभी सफलता प्राप्त नहीं कर सकता जहाँ संस्था का विशेष निर्देशन है और मतों की प्रधानता है। प्लेटो के अनुरूप ही उन्हें भी संख्या के प्रभुत्व में नहीं बल्कि ज्ञान की शक्ति में विश्वास था। उनका कहना था कि –''जब डॉक्टर और वकील बनने के लिये विशिष्ट क्षमता की आवश्यकता होती है, तो कोई कारण नहीं है कि उस मतदाता के

ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218
ISSN NO.-2347-2944
Vol.-10, No.-I, Issues-11 YEAR- June -2019

सम्बन्ध में, जो राष्ट्र के विभिन्न मामलों का प्रबन्ध करने वाले व्यक्तियों को चुनता है, विशेष दक्षता के सिद्धान्त की अवहेलना की जाये।''10 वे अच्छी तरह से समझती और अनुभव करती थीं और इस बात का उन्हें कष्ट भी था कि अनेक पश्चिमी राष्ट्र प्रजातांत्रिक ढाँचे की आड़ में अराजकता, अज्ञानता तथा संगठित शक्ति का अखाड़ा बने हुए थे, उन्होंने लोकतंत्र की परम्परा की आलोचना की जिसमें सिर्फ खोपड़ियाँ गिनी जाती है और यह नहीं देखा जाता कि इन खोपड़ियों में क्या है?11 उन्होंने यहाँ तक कहा कि पश्चिमी लोकतांत्रिक देशों में 'अनेक शिर वाले अज्ञान'12 का आधिपत्य है। उनका यह मानना था कि आध्यात्मिक तथा नैतिक ज्ञान से युक्त व्यक्ति को दण्ड धारण करने का अधिकार दिया जाय।

इसके साथ–साथ यदि शक्ति के पारस्परिक संघर्ष को रोकना है तो शासकीय पद पर बहुसंख्यकों का आधिपत्य नहीं होना चाहिए। बल्कि शासन संचालन का दायित्व निःस्वार्थ भाव से युक्त, सार्वजनिक हित का संवर्धन करने वाले बुद्धिमान व्यक्तियों के पास ही होना चाहिए। उनके लिये शासकीय पद स्वार्थ सिद्धि का साधन न होकर समाज सेवा का अवसर होना चाहिए। एनी बेसेन्ट ने लिखा है –''हमारे बन्धुत्व के आदर्श को शासन के क्षेत्र में चरितार्थ करने का अर्थ है कि शक्ति पर बुद्धिमानों का अधिकार हो न कि मूर्खो का, कानून बनाने का दायित्व उनके पास हो जिन्हें उद्योग की जटिलता, गृहस्थी अथवा नगर की आवश्यकताओं की समझ हों, जन–सामान्य को सुख का अधिकार है परन्तु वे अपने लिये शारीरिक शक्ति, विधिक हिंसा और प्रतिस्पर्द्धा के द्वारा प्राप्त नहीं कर सकते। उचित यही होगा कि बुद्धिमान और समझदार लोग सुख प्राप्ति के मार्ग पर उनका पथ–प्रदर्शन एवं सहयता करें। श्रमिकों की इस समस्या का समाधान तभी हो सकता है जब श्रमिक संगठन स्वार्थ रहित हों। आने वाली समस्या को सुलझाने का प्रयत्न हम सभी करें। परन्तु यह तभी सम्भव है जब तक कि हम यह नहीं मान लेते कि सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति ही शासन करें।

आध्यात्मिक राष्ट्रवाद का सिद्धान्त– एनी बेसेन्ट के राजनीतिक जीवन के मूल में उनके आध्यात्मिक आदर्श थे। भारत से उन्हें अगाध प्रेम था। वे कहती थीं –राष्ट्रीय विकास भारत की आवश्यकता है और यह भारत के अनुकूल होना चाहिए। भारतीय राष्ट्रवाद को उग्र एवं संकीर्ण न होकर नैतिकता तथा विवेक के आदर्श पर आधारित होनी चाहिए। सच्चा राष्ट्रवाद वही है जो आध्यात्मिक धरातल पर खड़ा हो। उन्होंने राष्ट्रवाद के उस भौतिक सिद्धान्त का खण्डन किया जो उसे पूँजीवाद की एक विकृत उपज मानता है। उनके विचारों में राष्ट्र एक गम्भीर आन्तरिक जीवन से स्पन्दित आध्यात्मिक सत्ता है। उन्होंने भारत के प्राचीन साहित्य और उस साहित्य में साकार हुए अतीत में से भारतीय राष्ट्रवाद की जड़ें ढूंढ निकाली थीं।13 भारत के अतीत के आदर्श को स्पष्ट करते हुए कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन (1917) में अपनी अध्यक्षीय उद्‌बोधन में कहा –''आखिर राष्ट्र क्या है? यह उसी 'दैवीय ज्वाला' की चिनगारी है, उसी दैवीय जीवन' का एक अंश है जिसे श्वास द्वारा निकाल कर इस दुनियां में भेज दिया गया है और जो अपने चारों ओर व्यक्तियों का एक समूह जमा करके सबको एक सूत्र में बांध देता है। उसकी शक्ति गुण तथा विशेषता उसी में विद्यमान दैवी जीवन के अंश पर निर्भर है, वह जीवन जो उसे रंग रूप देता है और 'एक' बना देता है। राष्ट्रीयता का उपयोग है– अपनी विशेषता के अनुसार दुनिया की सेवा करना। जब कोई राष्ट्र अपना ध्येय पूरा करने से पहले ही विकृत हो जाता है, तो उसे समस्त विश्व की हानि होती है।''14

भारत के भविष्य के सम्बन्ध में एनी बेसेन्ट का आदर्श बहुत उज्ज्वल तथा गौरवपूर्ण था। 1917 के कांग्रेस अधिवेशन के अध्यक्षीण भाषण में उन्होंने यह भी स्वीकार किया था कि –''शीघ्र ही हम भारत को गर्वीला, आत्मविश्वासी, शक्तिशाली तथा स्वतंत्र देखेंगे और वह एशिया का वैभव तथा विश्व का प्रकाश एवं वरदान बनेगा।''15 1930 में एनी बेसेन्ट ने भारत को पूर्ण राज्य का दर्जा देते हुए अपनी कविता में भारत को उठ खड़े होने के लिये ललकारा –

''हे भारत ! हे पूर्ण राष्ट्र !
हे भारत भविष्य के !
कितनी देर और है जब तुम अपना पद प्राप्त करोगें?
कितनी देर और है जब दास स्वतंत्र जीवन बितायेंगे?
कितनी देर और है जब तुम्हारी आत्मा तुम्हारे सम्पूर्ण सागर में विलीन हो जायेगी।16

राष्ट्रमण्डल का सिद्धान्त– एनी बेसेन्ट ने राष्ट्र को ईश्वर का साक्षात् रूप तथा राश्ट्रवाद को एक आध्यात्मिक तत्व स्वीकार करते हुए उसे जनता की अन्तरात्मा की अभिव्यक्ति बताया। मेजिनी, गाँधी और अरविन्द के समान एनी बेसेन्ट ने विश्व साम्राज्य के स्थान पर राष्ट्रों के एक कामनवेल्थ (राष्ट्रमण्डल) का स्वप्न देखा था।17 इनका मानना था कि प्रत्येक राष्ट्र का संगठन होने के पश्चात् सभी राष्ट्रों का एक विश्व संघ में संगठित होना आवश्यक है। जिससे विश्व शांति के आदर्श को प्राप्त किया जा सके। एनी बेसेन्ट ने लिखा है कि –''योजना का अगला सोपान स्वतंत्र राष्ट्रों के राष्ट्रमण्डल का निर्माण है जिसमें भारत का बराबरी का स्थान एवं योगदान होगा। यही कारण है

कि जब अंग्रेज यहाँ आये तो दूसरों को जाना पड़ा। ब्रिटिश राष्ट्र को चुना गया कि वह यहाँ आये और भारतीय राष्ट्र से मिलकर एक विश्व साम्राज्य की स्थापना करे। जहाँ विश्व राष्ट्र मण्डल हों, शांति व प्रेम से शासन करने वाला विश्व संघ हो।''18 उनका स्वप्न था कि भविष्य में भारत और ब्रिटेन मिलकर एक राष्ट्रमण्डल का निर्माण करेंगे।19 उनका उद्देश्य है कि भारत के गौरवपूर्ण आध्यात्मिक आदर्श और ब्रिटेन की महान भौतिक और वैज्ञानिक समृद्धि को संयुक्त करके पश्चिम एवं पूर्व को भावी पीढ़ियों को सहायता प्रदान करने के लिये सामंजस्य पूर्ण सहयोग के सूत्रों से आबद्ध कर दिया जाय। इस राष्ट्रमण्डल के दो प्रमुख घटक – ब्रिटेन और भारत होंगे। यह भावी विश्व के राष्ट्रमण्डल का आदर्श होगा। यह संकुचित पैमाने पर अन्तर्राष्ट्रीयतावाद का प्रतिरूप एवं प्रतिबिम्ब होगा।

एनी बेसेन्ट को यह विश्वास था कि इस योजना में ब्रिटेन अपनी भूमिका अदा करेगा और न्याय की सर्वोच्चता की सुरक्षा के लिये दूसरे राष्ट्रों पर अत्याचार करने के बजाय, एक ऐसा राष्ट्रमण्डल निर्मित करेगा जसमें प्रत्येक जाति, रंग, परम्परा, नस्ल, वंश, धर्म तथा रीति रिवाज को अपनाने वाले राष्ट्र सम्मिलित होंगे। इस प्रकार पूर्व एवं पश्चिम, एशिया एवं यूरोप समानता की भावना के साथ आगे बढ़ेंगें और मानवता का कल्याण करेंगे।

राज्य एवं सरकार सम्बन्धी विचार– एनी बेसेन्ट के राजनीतिक विचारों की जानकारी उनके द्वारा राष्ट्रीय वाणिज्य कालेज मद्रास में राजनीति विज्ञान पर दिये गये व्याख्यान से प्राप्त होती है। उन्होंने व्याख्यान में कहा था कि –''मानव जीवन के समस्त व्यापार चाहे वे सामाजिक हों या आर्थिक, राजनीतिक हो या धार्मिक, परस्पर घनिष्ठ रूप से सम्बद्ध एवं अन्योनाश्रित होती है। एक के अभाव में दूसरे का अस्तित्व शून्य हो जाता है।20 इस प्रकार उन्होंने व्यक्ति को समाज का आवश्यक अंग मानते हुए दोनों के पारस्परिक सम्बन्धों को समाज के विकास का आधार बताया। वे प्राचीन भारतीय राजनीतिक चिन्तन, आदर्शवाद तथा ब्रिटेन के उदारवाद से प्रभावित थीं। अतः अपने व्याख्यानों एवं लेखों में मनु के राजधर्म तथा कौटिल्य के अर्थशास्त्र की महत्ता का गुणगान किया। इसके साथ ही वे हरबर्ट स्पेंसर रानाडे एवं महात्मा गाँधी की तरह ही जीवन को एक अविभाज्य इकाई मानती थीं। उनका विचार था कि वर्तमान के राजनीति विज्ञान का आधार भविष्य का इतिहास है। इस जगत के कल्याण के लिये यह अनिवार्य हो जाता है कि पूर्व और पश्चिम के ऐतिहासिक तथ्यों का समिश्रण करके एक नवीन राजनीतिक दर्शन का निर्माण किया जाय।21

राज्य सम्बन्धी विचार– एनी बेसेन्ट राजनीतिक वैचारिक दृष्टिकोण से अरस्तू से प्रभावित थीं अतः इनके राजनीतिक विचारों पर अरस्तू का स्पष्ट छाप दिखाई पड़ता है। अरस्तू की तरह ही वे राज्य की मूलभूत इकाई परिवार को मानती है। इनके अनुसार परिवार का संगठन, पति–पत्नी, बच्चे, माता–पिता और अचल सम्पत्ति से मिलकर होता है। परिवार का वरिष्ठ सदस्य ही परिवार का मुखिया होता है। जिसके आदेशों का पालन सभी अनिवार्यतः करते हैं। परिवार के प्रत्येक सदस्यों के कर्त्तव्य का निर्धारण होता है जिसका पालन सभी सहर्ष करते हैं। इस प्रकार परिवार में ही राज्य का प्रारम्भिक स्वरूप निहित है। राज्य का दूसरा स्वरूप 'कबिलाई समाज' में पाया जाता है।22 ये कबीले एक ही पूर्वज से उत्पन्न विभिन्न परिवारों के समूह होते हैं जो अपनी सुरक्षा की दृष्टिकोण से एक निश्चित क्षेत्र में निवास करते है। जिसका संगठन एक राज्य की तरह तथा संचालन एक सरकार की तरह होता है। कबीले के समस्त सदस्यों का उद्देश्य एवं हित एक समान होता है, जिसकी पूर्ति हेतु परस्पर मिल–जुलकर कर्त्तव्यों का पालन करते हैं। राज्य की परिभाषा देते हुए उन्होंने कहा था कि –''राज्य विभिन्न व्यक्तियों से संगठित एक विस्तृत समुदाय है, जो निश्चित भू–भाग के अन्तर्गत रहने वाले लोगों एवं विभिन्न जन–समूहों के हितों का संवर्द्धन सरकार के माध्यम से करती है।''23 इस तरह से उन्होंने 'राज्य को साध्य तथा सरकार को साधन' के रूप में माना है।

सरकार सम्बन्धी विचार – एनी बेसेन्ट का विचार है कि –राज्य अपनी इच्छाओं की पूर्ति तथा शक्ति की अभिव्यक्ति जिस तंत्र के माध्यम से करती है उसे सरकार कहते हैं। सरकार में संप्रभु शक्ति के साथ–साथ सर्वोच्च सत्ता भी निहित होती है। राज्य की क्या इच्छा है? इसकी जानकारी सरकार के कार्यों से ही मिलती है। सरकार के तीन अंग होते है – 1. व्यवस्थापिका, 2. कार्यपालिका, 3. न्यायपालिका। एनी बेसेन्ट ने कहा है कि– ''कानून निर्माण का कार्य व्यवस्थापिका का है, कार्यपालिका उसे क्रियान्वित करती है तथा न्यायपालिका पुलिस विभाग के सहयोग से राज्य में शांति व्यवस्था बनाये रखने रखती है। इन तीनों अंगों को सामूहिक रूप से 'सरकार' के नाम से सम्बोधित किया जाता है।''

अधिकार एवं कर्त्तव्य सम्बन्धी विचार– एनी बेसेन्ट अधिकार एवं कर्त्तव्यों के सम्बन्ध में भारतीय आदर्शों से अत्यधिक प्रभावित थीं। अतः उन्होंने पाश्चात्य देशों के अधिकार सम्बन्धी व्यक्तिवादी विचारों का खण्डन किया और कहा कि इन देशों के सामाजिक जीवन में संघर्ष व अशांति उत्पन्न होने का प्रमुख कारण यह है कि वहाँ कर्त्तव्य की उपेक्षा करते हुए अधिकारों को अत्यधिक महत्व दिया।

गया है। इसलिये उन्होंने मानवाधिकारों का समर्थन किया। लोक कल्याणकारी जनतांत्रिक राज्यों में व्यक्तियों के व्यक्तित्व के विकास के लिये उन्हें मौलिक अधिकार प्रदान किये जाते हैं, जिससे उनके व्यक्तित्व का विकास होता है। अतः राज्य के अन्तर्गत समस्त नागरिकों को विचार अभिव्यक्ति, सभा या सम्मेलन बनाने, के अतिरिक्त धार्मिक, राजनीतिक एवं आर्थिक अधिकार प्रदान किये जाने चाहिए। सरकार का यह दायित्व है कि वह नागरिकों के आदर्श और उच्च नैतिक चरित्र निर्माण में संबल प्रदान करने वाली परिस्थितियों को उपलब्ध कराये, जिससे समस्त नागरिक स्वेच्छा से अपने कर्त्तव्य का पालन कर सकें और उनका जीवन सुखी तथा समृद्धशाली हो सके। एनी बेसेन्ट का यह मानना था कि –प्राचीन भारतीय आदर्शों के अनुसार व्यक्ति जन्म से ही परिवार, समाज, जाति एवं सरकार के प्रति अपने कर्त्तव्य का पालन बिना परिणाम की प्रतिक्षा किये पूरी निष्ठा और ईमानदारी से करता है। ''प्राचीन भारतीय आदर्शों के उत्थान से ही आदर्श समाज का निर्माण किया जा सकता है।''24 इस प्रकार एनी बेसेन्ट के राजनीतिक विचारों पर फेबियनवाद के मानवतावादी दर्शन तथा ब्रिटिश उदारवादी आदर्शवाद एवं हिन्दू धर्म के राजनीतिक दर्शन का व्यापक प्रभाव दिखाई पड़ता है। वे कौटिल्य के अर्थशास्त्र से अत्यधिक प्रभावित थीं और उसे राजनीतिशास्त्र पर लिखित महानतम ग्रन्थ मानती थीं। वे भारत की प्राचीन गणराज्य व्यवस्था को सच्चा गणतन्त्र मानती थीं। उनकी दृष्टि से राज्य का प्रमुख उद्देश्य जनकल्याण के साथ–साथ नागरिकों के जीवन स्तर का उत्थान होना चाहिए। अतः व्यक्ति की गरिमा स्थापित करने एवं राज्य की निरंकुशता की प्रवृत्ति को रोकने के लिये राज्य की सर्वोच्च शक्ति जनता में निहित होना चाहिए। इस प्रकार राज्य का स्वरूप लोककल्याणकारी होना चाहिए।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. बेसेन्ट, एनी : द यूचर ऑफ इण्डियन पॉलिटिक्स, थियोसोफिकल पब्लिशिंग हाउस, अड्यार मद्रास, 1922, पृ0 47
2. एनी बेसेन्ट, इण्डिया, वाल्यूम–चतुर्थ, एसेज एण्ड एड्रेसेज, थियोसोफिकल पब्लिशिंग हाउस, अड्यार, मद्रास, 1913, पृ0 12
3. अय्यर, सीपी0 रामास्वामी, अनुवादक–सूर्य नारायण मुंशी, एनी बेसेन्ट, पूर्वोद्धृत, पृ0 13
4. बेसेन्ट, एनी : स्पीचेज एण्ड राइटिंग्स, जी0ए0 नटेसन एण्ड कं0, मद्रास, 1921, पृ0 53–54
5. वर्मा, डॉ0 विश्वनाथ प्रसाद : आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिन्तन, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा, 2015–16, पृ0 130
6. शर्मा, डॉ0 योगेन्द्र कुमार : भारतीय राजनीतिक विचारक, भाग–एक, कनिष्का पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, 2001, पृ0 147–148
7. बेसेन्ट, एनी : लेक्चर्स ऑन पोलिटिकल साइन्स, थियोसोफिकल पब्लिशिंग हाउस, अड्यार, मद्रास, 1918, पृ0 133
8. वर्मा, डॉ0 विश्वनाथ प्रसाद : आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिन्तन, पूर्वोद्धृत, पृ0 131
9. बेसेन्ट, एनी : स्पीचेज एण्ड राइटिंग्स, पूर्वोद्धृत, पृ0 167
10. 21 अप्रैल 1922 की 'न्यू इण्डिया' में एनी बेसेन्ट का लेख एवं बेसेन्ट स्पीरिट सीरिज, एनी बेसेन्ट बिल्डर्स ऑफ न्यू इण्डिया, थियोसोफिकल पब्लिशिंग हाउस, अड्यार, मद्रास, 1942, पृ0 28
11. बेसेन्ट, एनी : शैल इण्डिया लिव ऑर डाई?, थियोसोफिकल पब्लिशिंग हाउस, अड्यार, मद्रास, 1925, पृ0 112
12. बेसेन्ट, एनी : द यूचर ऑफ इण्डियन पोलिटिक्स, पूर्वोद्धृत, पृ0 275
13. बेसेन्ट, एनी : हाऊ इण्डिया रॉट फार फ्रीडम, थियोसोफिकल पब्लिशिंग हाउस, अड्यार, मद्रास, 1915, पृ0 11
14. अय्यर, सी0पी0 रामास्वामी : एनी बेसेन्ट, प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, 1963, पृ0 136
15. अय्यर, सी0पी0 रामास्वामी : एनी बेसेन्ट, पूर्वोद्धृत, पृ0 144
16. बेसेन्ट, एनी : "Oh India! Awake! Arise! New In dia, कविता, 1 मई, 1930
17. शर्मा, डॉ0 योगेन्द्र कुमार : भारतीय राजनीतिक विचारक, भाग–एक, पूर्वोद्धृत, पृ0 146
18. वर्मा, डॉ0 विश्वनाथ प्रसाद : पूर्वोद्धृत, पृ0 136
19. बेसेन्ट, एनी : द यूचर ऑफ इण्डियन पॉलिटिक्स, पूर्वोद्धृत, पृ0 314–315
20. बेसेन्ट, एनी : लेक्चर्स ऑन पोलिटिकल साइन्स, पूर्वोद्धृत, पृ0 4–6
21. वही, पृ0 4
22. नागोरी, एस0एल0 : एनी बेसेन्ट एवं भारत का राष्ट्रीय आन्दोलन, पोईन्टर पब्लिशर्स, जयपुर, 1995, पृ0 73–74

*****